www.researchvidyapith.com ISSN (Online): 3048-7331

Research Vidyapith International Multidisciplinary Journal

(International Open Access, Peer-reviewed & Refereed Journal)

(Multidisciplinary, Monthly, Multilanguage)

*** Vol-2* *Issue-5* *May 2025***

बी0एड0 प्रशिक्षार्थियों की शिक्षण दक्षता का उनके जीवन सन्तुष्टि के सम्बन्ध में अध्ययन

प्रो0 लोकेश त्रिपाठी

प्रोफेसर, बी0एड0 विभाग, बाबा राघवदास स्नातकोत्तर महाविद्यालय, देवरिया

प्रेम नारायन पाण्डेय

शोध छात्र, शिक्षाशास्त्र विभाग, दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर

प्रस्तावना–

शिक्षा पद्धति की सफलता शिक्षकों की योग्यता पर निर्भर करती है। अच्छे एवं प्रभावपूर्ण शिक्षकों के अभाव में सर्वोत्तम शिक्षा पद्धति का भी असफलत होना अवश्यम्भावी है, लेकिन अच्छे प्रभावपूर्ण एवं योग्य शिक्षकों द्वारा शिक्षा पद्धति के दोषों को भी अधिकांशतः दूर किया जा सकता है। शिक्षक कर्तव्यनिष्ठ, विषय ज्ञान के साथ–साथ चरित्रवान, धैर्यवान, परिश्रमी, प्रभावपूर्ण शिक्षण वाला तथा मैत्रीपूर्ण सम्बन्ध स्थापित करने वाला है तो उसे अपने व्यवसाय में संतुष्टि, सफलता व पूर्ण सम्मान मिलता है। शिक्षक के व्यक्तित्व का प्रभाव उसकी शिक्षण कला पर अवश्य पड़ता है और उसकी दक्षता का प्रभाव उसके व्यक्तित्व पर पड़ता है। इस प्रकार से शिक्षक के लिए उसके व्यक्तित्व और दक्षता ठीक उसी प्रकार है, जिस प्रकार जहाल में पोल होता है। बिना शिक्षण दक्षता और उत्तम व्यक्तित्व के शिक्षक अपने शिक्षण कार्य में प्रभावशाली नहीं हो सकता है। जैसे– समुद्र में कोई जहाज बिना पाल के होता है और तुफान आने पर डूब जाता है।

किसी भी राष्ट्र का विकास उसकी शिक्षा व्यवस्था पर निर्भर करता है। जैसी शिक्षा वैसा राष्ट्र। वर्तमान परिस्थितियों में यह देखने को मिलता है कि विद्यालयों में नव–नियुक्त शिक्षकगण समझते हैं कि कक्षाओं में विषय का प्रतिपादन करना ही उनका एकमात्र दायित्व है। इस कार्य को अत्यन्त प्रमाणिकता, निष्ठा व परिश्रमपूर्वक किया गया है तो वे उसे अपनी सफलता का प्रमाण मानने लगते हैं।

राधाकृष्णन् आयोग (1948–49) ने शिक्षकों को महत्त्व देते हुए इन्हें सम्पूर्ण शिक्षा की रीढ़ माना है। इस आयोग ने शिक्षक प्रशिक्षण की धारणा में यह कहकर परिवर्तन करने की आवश्यकता पर बल दिया कि– ''सच्ची शिक्षा केवल पाठ्यक्रम के पाठों को पढ़ाना एवं स्मरण करना नहीं है, वरन् जीवनयापन एवं उद्देश्यपूर्ण कार्यों में भाग लेना भी है।'' कोठारी आयोग (1964–66) ने भी शिक्षकों के चयन, वेतन, सेवा शर्तों आदि के बारे में सबल संस्तुतियाँ भारत सरकार को प्रेषित की थी। आयोग ने आगे की कहा है कि शिक्षक–शिक्षा के सभी स्तर पर पाठ्यक्रमों एवं कार्यक्रमों को उन आधारभूत को तैयार किया जा रहा है। प्रत्येक राज्य में ''शिक्षक शिक्षा की राज्य परिषद्'' का निर्माण किया जाना चाहिए, जिस पर सभी क्षेत्रों एवं सभी स्तरों के प्रशिक्षण का उत्तरदायित्व होता है।

शिक्षण दक्षता–

शिक्षण दक्षता एक शिक्षक की वह स्थिति है, जिसे प्राप्त कर लेने के पश्चात् उसमें एक अच्छे शिक्षक के गुण विकसित हो जाते हैं। यद्यपि बदलते परिवेश के साथ शिक्षक को हमेशा समायोजन करना पड़ता है। अतः अनुसंध

ाान कार्य में उसकी रुचि होनी चाहिए एवं नई वैज्ञानिक विधियों एवं प्रविधियों से उसे परिचित होते रहना चाहिए। शिक्षण दक्षता से सम्बन्धित कुछ गुण निम्नलिखित हैं– अकादमिक एवं व्यवसायिक ज्ञान, पाठ योजना का निर्माण एवं प्रस्तुतिकरण तथा कक्षा प्रबन्धन, विद्यार्थी एवं उनके अभिभावक, विद्यालय तथा संस्थान प्रमुख आदि के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण, बच्चों को अभिप्रेरित करना एवं उनके विकास के लिए हर समय तैयार रखना, परिणाम प्रतिपुष्टि एवं जवाबदेही एवं व्यक्तिगत गुण।

जीवन सन्तुष्टि–

जीवन संतुष्टि से तात्पर्य किसी विशेष समय पर जीवन के बारे में भावनाओं और दृष्टिकोण के समग्र मूल्यांकन से है, जो नकारात्मक से लेकर सकारात्मक मूल्यांकन तक होता है। इसमें भावनात्मक, मनोवैज्ञानिक और सामाजिक पहलुओं सहित कल्याण के विभिन्न आयाम शामिल हैं। जीवन संतुष्टि व्यक्तिगत मूल्यों, सांस्कृतिक पृष्ठभूमि, आर्थिक स्थितियों और सामाजिक सम्बन्धों से प्रभावित होती है। जीवन संतुष्टि व्यक्तिपरक कल्याण का एक महत्त्वपूर्ण हिस्सा है। कई कारक व्यक्तिपरक कल्याण और जीवन संतुष्टि को प्रभावित करते हैं। सामाजिक– जनसांख्यिकीय कारकों में लिंग, आयु, वैवाहिक स्थिति, आय और शिक्षा शामिल हैं। मनोसामाजिक कारकों में स्वास्थ्य, बीमारी, कार्यात्मक क्षमता, गतिविधि स्तर और सामाजिक सम्बन्ध शामिल हैं। जैसे–जैसे लोग बड़े होते हैं, उन्हें जीवन संतुष्टि मिलती है।

शोध के उद्देश्य–

1. अनुदानित महाविद्यालय के बी0एड0 प्रशिक्षुओं की शिक्षण दक्षता का उनके जीवन संतुष्टि के मध्य सह–सम्बन्ध का अध्ययन करना।
2. स्ववित्तपोषित महाविद्यालय के बी0एड0 प्रशिक्षुओं की शिक्षण दक्षता का उनके जीवन संतुष्टि के मध्य सह–सम्बन्ध का अध्ययन करना।
3. पुरुष बी0एड0 प्रशिक्षुओं की शिक्षण दक्षता का उनके जीवन संतुष्टि के मध्य सह–सम्बन्ध का अध्ययन करना।
4. महिला बी0एड0 प्रशिक्षुओं की शिक्षण दक्षता का उनके जीवन संतुष्टि के मध्य सह–सम्बन्ध का अध्ययन करना।

उद्दश्यों के आधार पर शोध की परिकल्पनाएँ–

1. अनुदानित महाविद्यालयों के बी0एड0 प्रशिक्षुओं के शिक्षण दक्षता का उनके जीवन संतुष्टि के मध्य सार्थक सह–सम्बन्ध नहीं है।
2. स्ववित्त पोषित महाविद्यालय के बी0एड0 प्रशिक्षुओं की शिक्षण दक्षता का उनके जीवन संतुष्टि के मध्य सार्थक सह–सम्बन्ध नहीं है।
3. पुरुष बी0एड0 प्रशिक्षुओं की शिक्षण दक्षता का उनके जीवन संतुष्टि के मध्य सार्थक सह–सम्बन्ध नहीं है।
4. महिला बी0एड0 प्रशिक्षुओं की शिक्षण दक्षता का उनके जीवन संतुष्टि के मध्य सार्थक सह–सम्बन्ध नहीं है।

बी0एड0 प्रशिक्षणार्थियों की शिक्षण दक्षता एवं जीवन संतुष्टि प्रश्नावली एवं मापनी के आधार पर–

परिकल्पना संख्या– 1

अनुदानित महाविद्यालय के बी0एड0 प्रशिक्षुओं की शिक्षण दक्षता तथा जीवन संतुष्टि के बीच सह–सम्बन्ध गुणांक सारणीय–

अनुदानित महाविद्यालय के बी0एड0 प्रशिक्षु	
X	Y
rXY	0.629
N	200

उपर्युक्त सारणी संख्या–1 से स्पष्ट है कि अनुदानित महाविद्यालय के बी0एड0 प्रशिक्षुओं की शिक्षण दक्षता तथा जीवन संतुष्टि के बीच सह–सम्बन्ध गुणांक 0.629 प्राप्त हुआ है। शून्य परिकल्पना अस्वीकृत हुई है तथा चरों के मध्य धनात्मक सह–सम्बन्ध है। शिक्षण दक्षता और जीवन संतुष्टि इन दोनों ही चरों में शिक्षण दक्षता में

प्राप्त अधिक अंक अच्छे शिक्षण दक्षता को प्रदर्शित करता है। इसी प्रकार जीवन संतुष्टि के मापनी से प्राप्त अधिक अंक जीवन संतुष्टि का परिचायक है। इस प्रकार यहाँ यह प्राप्त हुआ है कि अच्छी शिक्षण दक्षता अच्छे जीवन संतुष्टि से सम्बन्धित है।

स्ववित्तपोषित महाविद्यालय के बी0एड0 प्रशिक्षुओं की शिक्षण दक्षता तथा जीवन संतुष्टि में क्या सम्बन्ध है, इसको ज्ञात करने के लिए दोनों चरों के मध्य सह–सम्बन्ध की गणना की गई है। सह–सम्बन्ध गुणांक के आधार पर ही इन चरों के मध्य क्या सम्बन्ध है, इसका आकलन किया जाता है, जिसका स्ववित्तपोषित महाविद्यालय के बी0एड0 प्रशिक्षुओं की शिक्षण दक्षता तथा जीवन संतुष्टि के बीच सह–सम्बन्ध गुणांक के अध्ययन।

परिकल्पना संख्या– 2

स्ववित्तपोषित महाविद्यालय के बी0एड0 प्रशिक्षुओं की शिक्षण दक्षता तथा मनोबल के बीच सह–सम्बन्ध गुणांक सारणीयन–

स्ववित्तपोषित महाविद्यालय के बी0एड0 प्रशिक्षु	
X	Y
rXY	0.665
N	200

उपर्युक्त सारणी संख्या–2 से स्पष्ट है कि स्ववित्तपोषित महाविद्यालय के बी0एड0 प्रशिक्षुओं की शिक्षण दक्षता तथा मनोबल के बीच सह–सम्बन्ध गुणांक 0.665 प्राप्त हुआ है। शून्य परिकल्पना अस्वीकृत हुई है तथा चरों के मध्य धनात्मक सह–सम्बन्ध है। शिक्षण दक्षता और जीवन संतुष्टि इन दोनों ही चरों में शिक्षण दक्षता में प्राप्त अंक अच्छे शिक्षण दक्षता को प्रदर्शित करता है। इसी प्रकार जीवन संतुष्टि के मापनी से प्राप्त अधिक अंक अच्छे जीवन संतुष्टि का परिचायक है। इस प्रकार यहाँ यह प्राप्त हुआ है कि अच्छी शिक्षण दक्षता अच्छे जीवन संतुष्टि से सम्बन्धित है।

पुरुष बी0एड0 प्रशिक्षुओं की शिक्षण दक्षता तथा जीवन संतुष्टि से क्या सम्बन्ध है, इसको ज्ञात करने के लिए दोनों चरों के मध्य सह–सम्बन्ध की गणना की गई है। सह–सम्बन्ध गुणांक के आधार पर ही इन चरों के मध्य क्या सम्बन्ध है, इसका आकलन किया गया है, जिसका विवरण आगे प्रस्तुत किया गया है

पुरुष बी0एड0 प्रशिक्षुओं की शिक्षण दक्षता तथा जीवन संतुष्टि के बीच सह–सम्बन्ध गुणांक का अध्ययन।

परिकल्पना संख्या– 3

पुरुष बी0एड0 प्रशिक्षुओं की शिक्षण दक्षता तथा जीवन संतुष्टि के बीच
सह–सम्बन्ध गुणांक सारणीयन
सारणी संख्या– 3

पुरुष बी0एड0 प्रशिक्षु	
X	Y
rXY	0.650
N	200

उपर्युक्त सारणी संख्या–3 से स्पष्ट है कि पुरुष बी0एड0 प्रशिक्षुओं की शिक्षण दक्षता तथा जीवन संतुष्टि के बीच सह–सम्बन्ध गुणांक 0.650 प्राप्त हुआ है। शून्य परिकल्पना अस्वीकृत हुई है तथा चरों के मध्य धनात्मक सह–सम्बन्ध है। शिक्षण दक्षता और जीवन संतुष्टि इन दोनों ही चरों में शिक्षण दक्षता में प्राप्त अधिक अंक अच्छे शिक्षण दक्षता को प्रदर्शित करता है। इसी प्रकार जीवन संतुष्टि के मापनी से प्राप्त अधिक अंक अच्छे जीवन संतुष्टि का परिचायक है। इस प्रकार यहाँ यह प्राप्त हुआ है कि अच्छी शिक्षण दक्षता अच्छे जीवन संतुष्टि से सम्बन्धित है।

महिला बी0एड0 प्रशिक्षुओं की शिक्षण दक्षता तथा जीवन संतुष्टि से क्या सम्बन्ध है, इसको ज्ञात करने के लिए दोनों चरों के मध्य सह–सम्बन्ध की गणना की गई है। सह–सम्बन्ध गुणांक के आधार पर ही इन चरों के मध्य क्या सम्बन्ध है, इसका आकलन किया गया है, जिसका विवरण आगे प्रस्तुत किया गया है। महिला बी0एड0 प्रशिक्षुओं की शिक्षण दक्षता तथा जीवन संतुष्टि के बीच सह–सम्बन्ध गुणांक का अध्ययन।

परिकल्पना संख्या– 4

महिला बी0एड0 प्रशिक्षुओं की शिक्षण दक्षता तथा मनोबल के बीच

सह–सम्बन्ध गुणांक सारणीयन

सारणी संख्या– 4

महिला बी0एड0 प्रशिक्षु	
X	Y
rXY	0.655
N	200

उपर्युक्त सारणी संख्या–4 से स्पष्ट है कि महिला बी0एड0 प्रशिक्षुओं की शिक्षण दक्षता तथा जीवन संतुष्टि के बीच सह–सम्बन्ध गुणांक 0.655 प्राप्त हुआ है। शून्य परिकल्पना अस्वीकृत हुई है तथा चरों के मध्य धनात्मक सह–सम्बन्ध है। शिक्षण दक्षता और जीवन संतुष्टि इन दोनों ही चरों में शिक्षण दक्षता में प्राप्त अधिक अंक अच्छे शिक्षण दक्षता को प्रदर्शित करता है। इसी प्रकार जीवन संतुष्टि के मापनी से प्राप्त अधिक अंक उच्च जीवन संतुष्टि का परिचायक है। इस प्रकार यहाँ यह प्राप्त हुआ है कि अच्छे शिक्षण दक्षता उच्च जीवन संतुष्टि से सम्बन्धित है।

शोध विधि–

प्रस्तुत शोधकार्य में सह–सम्बन्ध की गणना पीयरसन आर0 सांख्यिकी विधि द्वारा ज्ञात की गयी है।

जनसंख्या–

सिद्धार्थ विश्वविद्यालय से सम्बद्ध अनुदानित एवं स्ववित्तपोषित महाविद्यालय के प्रशिक्षणरत बी0एड0 प्रशिक्षुओं को जनसंख्या के रूप में परिभाषित किया गया है।

न्यादर्श–

प्रथम चरण में सिद्धार्थ विश्वविद्यालय से सम्बद्ध पाँच अनुदानित एवं पाँच स्ववित्तपोषित महाविद्यालय का चयन यादृच्छिक प्रतिचयन विधि से किया गया है। द्वितीय चरण में चयनित प्रत्येक महाविद्यालय से बीस पुरुष एवं बीस महिला कुल 400 बी0एड0 प्रशिक्षुओं का चयन स्तरीकृत यादृच्छिक प्रतिचयन विधि से किया गया है।

शोध में प्रयुक्त उपकरण–

बी0एड0 प्रशिक्षणार्थियों की शिक्षण दक्षता एवं मनोबल का पता लगाने के लिए डॉ0 बी0के0 पासी एवं एम0एस0 ललिथा क्रमशः इन्दौर, मैसूर द्वारा और जीवन संतुष्टि का पता लगाने के लिए प्रो0 लोकेश त्रिपाठी' एवं प्रेम नारायन पाण्डेय'' द्वारा निर्मित एवं प्रमापीकृत मापनी का प्रयोग किया गया है।

निष्कर्ष

जीवन संतुष्टि : जैसा कि शब्द से ही स्पष्ट है जीवन के प्रति संतुष्टि। दूसरे शब्दों में जीवन संतुष्टि से तात्पर्य जीवनयापन के प्रत्येक क्षेत्र सामाजिक, आर्थिक, नैतिक, वैयक्तिक, स्वास्थ्य एवं व्यवसाय में संतुष्ट होने से है। इस प्रकार जीवन संतुष्टि एक भावनात्मक घटक है। जीवन संतुष्टि यह बताती है कि व्यक्ति अपने जीवन को कैसा मानता है अथवा अपने वर्तमान जीवन एवं भविष्य के जीवनयापन के प्रति क्या महसूस करता है अथवा उसका जीवन जिस ओर जा रहा है, उसे कैसा लग रहा है ? जीवन संतुष्टि का सम्बन्ध व्यक्ति की आर्थिक, सामाजिक, व्यावसायिक, शारीरिक दशाओं से होता है। व्यक्ति में जीवन संतुष्टि की मात्रा से उसके विभिन्न मनोवैज्ञानिक चर यथा– दुश्चिन्ता, अभिवृत्ति, मूल्य, मनोबल, कार्य संतुष्टि एवं कार्य दक्षता आदि प्रभावित होते हैं।

सन्दर्भ ग्रन्थ–सूची

1. राय, पारसनाथ– अनुसंधान परिचय, लक्ष्मी नारायण अग्रवाल प्रकाशन, आगरा, संस्करण– 1989, पृष्ठ संख्या– 20
2. गुप्ता, एस0पी0– सांख्यिकी विधियाँ, शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद, संस्करण– 2002, पृष्ठ संख्या : 14–16
3. गुप्ता, एस0पी0– शैक्षिक मापन एवं मूल्यांकन, शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद, संस्करण– 2012, पृष्ठ

संख्या– 27

4. कुलश्रेष्ठ, डॉ0 एस0पी0– शैक्षिक तकनीकी एवं उसके मूल आधार, अग्रवाल पब्लिकेशन्स, आगरा, संस्करण– नवीन, पृष्ठ संख्या– 180
5. डॉ0 सारस्वत एवं श्रीवास्तव– भारतीय शिक्षा का इतिहास एवं समस्याएँ, न्यू कैलाश प्रकाशन, इलाहाबाद, संस्करणः 2008–2009, पृष्ठ संख्या– 145
6. शर्मा, डॉ0 आर0ए0– शिक्षा अनुसंधान के मूल तत्त्व एवं शोध प्रक्रिया, आर. लाल बुक डिपो, मेरठ, संस्करण– 2013, पृष्ठ संख्या– 175
7. जौहरी, वी0पी0 एवं पाठक, पी0डी0– भारतीय शिक्षा का इतिहास, अग्रवाल पब्लिकेशन्स, आगरा, संस्करण– 2012, पृष्ठ संख्याः 5–10

Cite this Article-

'प्रो0 लोकेश त्रिपाठी, प्रेम नारायन पाण्डेय', 'बी0एड0 प्रशिक्षार्थियों की शिक्षण दक्षता का उनके जीवन सन्तुष्टि के सम्बन्ध में अध्ययन', Research Vidyapith International Multidisciplinary Journal (RVIMJ), ISSN: 3048-7331 (Online), Volume:2, Issue:05, May 2025.

Journal URL- https://www.researchvidyapith.com/
DOI- 10.70650/rvimj.2025v2i50011
Published Date- 09 May 2025